647510 **BRS5HinE016D** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 5 (Remedial) (*CBCS*) Examination
March/April-2024 (NEW COURSE)
E-16 Hindi(Elective-16)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न- १ मैथिलीशरण गुप्त के जीवन-कवन पर प्रकाश डालिए । (१४)

अथवा

प्रश्न- १ 'नहुष' खण्डकाव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिए ।

प्रश्न- २ 'बृहस्पति' का चरित्र-चित्रण कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न- २ 'नहुष' खण्डकाव्य की नायिका शचि का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

प्रश्न- ३ निम्नांकित में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या लिखिए । (१४)

(१) "मानता हूँ और सब, हार नहीं मानता, अपनी अगति नहीं आज भी मैं जानता । "

(२) "विस्मय है किन्तु यहाँ भूल रहा कैसा मैं ? इन्द्राणी उसीकी इन्द्र है जो, आज जैसा मैं ।"

(३) "नहीं, किन्तु पद में सदैव एक मद है, सीमा लाँघ जाता उमडता जो नद है । "

(४) "समा हो समाज की है, वह जो करे, करे एक अबल का क्या, जिये जिये, मरे, मरे ।"

प्रश्न- ४ 'खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'नहुष' खण्डकाव्य का मूल्यांकन कीजिए । (१४)

अथवा

प्रश्न- ४ 'नहुष' काव्य के उद्देश्य की विस्तृत चर्चा कीजिए ।

प्रश्न- ५ निम्नांकित परिच्छेद का गुजराती में अनुवाद कीजिए । (१४)

"परिश्रम के बल पर सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति भी आश्चर्यजनक कार्य कर डालता है । सतत परिश्रम के माध्यम से ही गांधीजी एक सामान्य व्यक्ति से 'महात्मा' और 'बापू' बन पाए । परिश्रम का दूसरा रूप ही तो तपस्या है । हमारे ऋषि-मुनियों ने तपस्या के बल पर ही 'अजेय' और 'दुर्जय' को विजित किया । ज्ञान के सूक्ष्मतम रहस्यों का उद्‌घाटन करने के लिए विद्वानों को जितना श्रम करना पडता है । उनके विचार युग-युग की थाती बन जाते हैं । उनसे प्रेरित होकर वर्तमान और भावी पीढी अपने जीवन-मार्ग पर प्रशस्त होती है । राम, कृष्ण, बुद्ध, नानक आदि को हम ईश्वर के रूप में पूजते हैं, यह उनके संघर्षमय जीवन का फल है । इन महापुरुषों ने जिन आदर्शों को सही माना उनको प्रतिपादित करने के लिए बहुत से कष्ट सहे, यातनाएँ जेली और अपना सर्वस्व उन्हीं पर न्योछावर कर दिया । इतिहास साक्षी है कि श्रम के सहारे मनुष्य ने असंभव को भी संभव बनाया है ।

****